रुचि एव अधिगम

रुचि (Interest) :- व्यक्तित्व के सम्पूर्ण विकास मे रुचि का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है

Scanned with CamScanner

बुद्धि, व्यक्तित्व आदि की तरह से रुचियों में भी व्यक्तिगत विभिन्नताएं पायी जाती है। विभिन्न विषयों, प्रकरणों, क्रियाएं आदि के प्रति व्यक्ति की रुचियां भिन्न भिन्न होती है। कोई व्यक्ति अध्यापक बनना चाहता है तो कोई वकील या डॉक्टर बनना चाहता है। किसी विद्यार्थी को गणित अच्छा लगता है तो किसी को विज्ञान, किसी को टीवी देखना तो किसी को खेलना पसन्द है ये सभी अन्तर रुचियों के विभिन्नता के कारण ही होते है। किसी काम को करने और न करने की इच्छा भी रुचियों पर निर्भर करती है यह बात अधिगम पर भी लागू होती है। "साधारण शब्दों में कहा जा सकता है कि रुचि किसी वस्तु, व्यक्ति, तथ्य, प्रतिक्रिया आदि को पसन्द करने तथा न करने एवं उसके प्रति आकर्षित होने की प्रवृत्ति है।"

रुचि बच्चों को केवल सीखने में ही सहायता प्रदान नहीं करती बल्कि उनके दृष्टिकोणों, उनकी प्रवृत्तियों तथा अन्य व्यक्तित्व सम्बन्धी विशेषताओं के निर्माण में भी सहायक होती है। यह उनके व्यक्तित्व के निर्माण की दिशा निर्देशित करती है।

गिलफोर्ड के अनुसार - "रुचि किसी क्रिया, वस्तु या व्यक्ति पर ध्यान देने, उसके द्वारा आकर्षित होने, उसे पसन्द करने तथा उससे सन्तुष्ट पाने की प्रवृत्ति है।"

रुचियों की प्रकृति एवं विशेषताएं -

i- रुचि का आवश्यकता एवं लक्ष्य के साथ सम्बन्ध
ii- रुचि एक अभिप्रेरक के रूप में
iii- सीखने में सहायक
iv- अस्थाई प्रकृति
v. रुचि ध्यान को केन्द्रित करती है।
vi- संतोष प्रदान करती है।

Scanned with CamScanner

सक्रिय सहभागिता और अधिगम (Active Engagement) :— कक्षा कक्ष में चल रही अधिगम प्रक्रिया की सफलता बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करती है, कि छात्रों की सहभागिता की स्थिति क्या है। यदि विद्यार्थी सक्रिय है तो अधिगम प्रभावी होगा नहीं तो नहीं। सक्रिय सहभागिता दो शब्दों से मिलकर बना है जिसमे पहला सक्रिय, दूसरा सहभागिता। साधारण शब्दो में व्यक्ति द्वारा किसी भी कार्य मे अपनी प्रस्तुती या भागीदारी दर्ज करवाना सहभागिता कहलाती है। वही जब कोई व्यक्ति किसी कार्य मे प्रेरणा, संज्ञानात्मक रणनीतिया एवं अपनी समस्त ज्ञानेन्द्रियों को उस कार्य के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु समाहित कर देता है तो उसी को सक्रिय सहभागिता कहते है। जब कोई छात्र अथवा व्यक्ति सक्रियता से किसी कार्य से व्यस्त होता है तो वह उस कार्य या विषय मे प्रभावशाली विश्लेषण व उसके विषय में बहुतायात जानकारी अर्जित करने मे सफल होता है।

सक्रिय सहभागिता और अभिप्रेरणा :—

सक्रिय सहभागिता और अभिप्रेरणा का एक दूसरे के साथ बहुत गहरा सम्बन्ध है। व्यवहार मे परिवर्तन के लिए एक अभिप्रेरक की आवश्यकता होती है और अभिप्रेरको की रचना हमारी जरूरतो के आधार पर होती है। अभिप्रेरणा से हमारा तात्पर्य है कि किसी कार्य को करने के लिए के-द्रीय बल। हम प्राय यह देखते है कि साइकिल सीखने वाला बच्चा बार बार गिरने के बावजूद भी साइकिल सीखना नही छोड़ता है। अक्सर परीक्षा मे विद्यार्थी देर तक पढ़ते हुए देखे जा सकते है

Scanned with CamScanner

क्यो? इतनी कठिनाइयां उठाने के बावजूद भी कोई कुछ न कुछ सीखने का प्रयास क्यो करता है? इन सब बातो और क्यो का उत्तर केवल एक शब्द अभिप्रेरणा मे निहित है। इस प्रकार हम देख रहे है कि अभिप्रेरणा किसी भी अधिगम कार्य को करने के लिए सक्रिय सहभागिता को बढावा कर रही है।

अधिगम में सक्रिय सहभागिता का महत्व :- अधिगम मे सक्रिय सहभागिता का महत्व निम्न बिन्दुओं के माध्यम से समझ सकते है-

i- कक्षा कक्ष मे सक्रिय सहभागिता जितनी अधिक होगी विद्यार्थी उस विषय वस्तु को उतनी ही प्रभावशाली ढंग से सीखेंगे।

ii- सक्रिय सहभागिता का स्तर जितना ऊंचा होगा विद्यार्थियो की उपलब्धि उतनी ही अधिक होगी।

iii- विद्यार्थियो का अभिप्रेरणा स्तर भी उनकी सहभागिता को बढ़ाता है इसलिए अभिप्रेरणा और सक्रिय सहभागिता दोनो का ही अधिगम मे महत्व है।

iv- विद्यार्थियो की सक्रिय सहभागिता से कक्षा का वातावरण भी अधिगम योग्य हो जाता है।

v- सक्रिय सहभागिता से अधिगम कर्ता और अध्यापक दोनो का मनोबल बढ़ता है जिससे कि बेहतर दिशा मे वाद संवाद होने की सम्भावना रहती है।

Scanned with CamScanner

परिपृच्छा (जाँच पड़ताल) Inquiry ⇒ परिपृच्छा एक ऐसी प्रक्रिया है जो हमारी ज्ञान सम्बन्धी शंकाओं का निवारण करती है और समस्याओं का समाधान करती है। परिपृच्छा

Scanned with CamScanner

परिपृच्छा के सिद्धान्त अनेक प्रकार की दृढ़ताद्द का परिणाम होते है जिसका अनेक ढंग से विश्लेषण किया जाता है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में परिपृच्छा उपागम एक ऐसा साधन है जो की सूचनाओ और आंकड़ो तक पहुचाने के सिद्धान्त पर केन्द्रित है। यह समस्या समाधान कौशल को विकसित करने के ऊपर आधारित है यह विधि अधिक ज्ञात केन्द्रित है जोकि अध्यापक को केवल अधिगम प्रक्रिया को सरलीकृत करने का साधन मात्र मानती है। यह इस बात पर अधिक बल देती है कि हम ज्ञान तक कैसे पहुचे बजाय इसके कि हम क्या जानते है। ज्ञात ज्ञान के निर्माण मे सक्रिय सहभागिता द्वारा घनिष्ट रूप से सम्बन्ध होते है अत: हम कह सकते है कि परिपृच्छा अधिगम का एक आयाम है जिसमे भौतिक और प्राकृतिक विश्व के सम्बन्ध मे जानने का प्रयास किया जाता है। इसमे प्रश्न पूछे जाते है और उनके उत्तरो का विवेचन करके नवीन ज्ञान की खोज की जाती है।

परिपृच्छा के प्रकार एवं स्तर -

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में परिपृच्छा का महत्वपूर्ण स्थान है। यह एक ज्ञात केन्द्रित विधि है। जिसमे छात्रो की सक्रिय सहभागिता के द्वारा उनको नया ज्ञान प्रदान किया जाता है और उसका विश्लेषण किया जाता है। अधिगम को आधार मानकर परिपृच्छा को विभिन्न स्तर पर उपयोग किया जाता है-

i- सत्यापन

ii- संरचनात्मक

iii- मार्गदर्शित परिपृच्छा

iv- सर्वविदित और सत्य परिपृच्छा

उपरोक्त चारो स्तरो को अध्यापक द्वारा कक्षा कक्ष

Scanned with CamScanner

में प्रयोग करता है पहले स्तर में प्रश्न पूछकर छात्रो से सत्यापन करने को कहता है, दूसरे स्तर पर प्रश्न करके विश्लेषण करने को कहता है, तीसरे स्तर पर शोध सवाल प्रदान किये जाते है तथा चौथे स्तर पर छात्रो को कोई समस्या ढूंढने को कहा जाता है तथा उस समस्या का समाधान भी।

वैज्ञानिक परिपृच्छा — ज्ञान शिक्षण की एक युक्ति के रूप में वैज्ञानिक परिपृच्छा अध्यापको की देन है, इसके अंतर्गत इस प्रकार की परिस्थितिया उत्पन्न की जाती है जिससे छात्र की योग्यता का विकास हो सके। और विज्ञान के प्रति समझ बढ़ सके। वैज्ञानिक परिपृच्छा मे छात्रों का लक्ष्य होता है कि कार्यो द्वारा खोज करना और प्रश्न पूछने की क्षमताओ को विकसित करना। वैज्ञानिक परिपृच्छा में सार्थक ज्ञान को प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है। इसका प्रयोग ~~उ~~ अरस्तु और सुकरात अपने समय मे किया करते थे। ज्ञान एक समय के अनुसार बदलता रहता है।

वैज्ञानिक परिपृच्छा के सोपान = इसमे प्रश्नों का उत्तर वैज्ञानिक परिपृच्छा के सोपानो का प्रयोग करके प्राप्त किया जाता है - इस प्रक्रिया के सोपान इस प्रकार है,

i - समस्या का कथन
ii - संभावित समाधान (परिकल्पना)
iii - प्रयोगात्मक प्रारूप तैयार करना
iv - प्रदत्तो का संकलन
v - विश्लेषण करना
vi - निष्कर्ष निकालना

इस प्रकार वैज्ञानिक परिपृच्छा की प्रक्रिया का अन्त नही होता है अपितु आगे की परिपृच्छा का विस्तार के साथ साथ ज्ञान का सृजन होता है।

Scanned with CamScanner